है। करोड़ों लोगों के लिये अलगाववाद का जो समाजशास्त्र और धर्मशास्त्र ब्राह्मणों ने निर्मित किया, उसने राष्ट्रीयता को खण्डित किया था और उसी के कारण भारत अपनी स्वाधीनता खो बैठा था। इसलिये दलित विमर्श के केन्द्र में वे सारे सवाल हैं, जिनका संबंध भेदभाव से है, चाहे वे भेदभाव जाति के आधार पर हों, रंग के आधार पर हों, नस्ल के आधार पर हों, लिंग के आधार पर हों या फिर धर्म के आधार पर क्यों नहीं।[4] इसमें कोई दो मत नहीं है कि शिक्षा के प्रचार व प्रसार से दलित जातियों में नई चेतना और नए बोध का जागरण तैयार हो रहा था। इसके साथ ही अम्बेडकर जैसा बहुआयामी व्यक्तित्व दलितों को प्राप्त हो गया जिसने दलित आन्दोलन को एक नयी दिशा और आयाम दिया। ए.आर.देसाई अम्बेडकर और दलित आन्दोलन के संबंध लिखते हैं– ''डॉ. अम्बेडकर ने उनकी तकलीफों के खिलाफ आवाज़ बुलन्द की और उनके मूलभूत मानवीय अधिकारों के लिये जमकर संघर्ष किए। 'आल इंडिया डिप्रेस्ड कलासेज एसोसियेशन' और 'ऑल इण्डिया डिप्रेस्ड क्लासेज फैडरेशन' इन जातियों के प्रमुख संगठन थे। दूसरे संगठन को डॉ. अम्बेडकर ने स्थापित किया और उन्होंने ही इसका नेतृत्व और पथ प्रदर्शन किया। इनके अलावा, दलित वर्गों में शुमार होने वाली जातियों के और भी अनेक स्थानीय और जातीय संगठन थे।[5]'' यह उद्धरण इस बात का प्रतीक है कि शताब्दियों की गुलाम जिन्दगी से त्रस्त, दुखी और बेहाल अस्पृश्य जातियाँ एकजुट हुई। अपना संगठन बनाकर संस्थायें स्थापित की और एक नियोजित ढ़ंग से दलित अथवा अस्पृश्य जातियों ने आन्दोलन आरम्भ किया। डॉ. अम्बेडकर ने दलित आन्दोलन को एक राजनीतिक स्वरूप भी प्रदान किया। डॉ. अम्बेडकर ने दलित जातियों को राजनीतिक सेना के रूप में भी परिणित करने का प्रयास किया। उनके राजनैतिक दावे डॉ. अम्बेडकर की वकालत के कारण मान भी लिए गए और इनके लिये 1935 के विधान में विशेष प्रतिनिधित्व की व्यवस्था की गई थी। यों दलित जातियों की विशेष प्रतिनिधित्व की माँग राष्ट्र विरोधी थी और उससे राष्ट्रीय एकता कमजोर होती थी, फिर भी यह माँग इन जातियों के राजनीतिक जागरण की परिचायक थी।[6] इस तरह दलितों की राजनीतिक चेतना डॉ. अम्बेडकर के नेतृत्व में अपना रंग रूप प्रदर्शित करने लगी थी।

यहाँ पर यह कहना अनुचित न होगा कि भारत में शताब्दियों से अश्पृश्य जातियाँ रही हैं। उनके नारकीय जीवन से साधु-सन्त, आदि सभी दुःखी और चिंतित थे। धार्मिक सुधार आन्दोलनों द्वारा इस घृणित सामाजिक कुरीति के समाधान हेतु प्रयास किये गये। ए.आर.देसाई इस पर अपने विचार प्रकट करते हुए कहते हैं–

''हिन्दू समाज में सदियों से अस्पृश्यता का प्रचलन रहा है। बुद्ध, रामानुज, रामानन्द, चैतन्य, कबीर, नानक, तुकाराम और अन्य लोगों द्वारा चलाए गए

4. कंवल भारती, दलित विमर्श की भूमिका, पृष्ठ 17.
5. ए.आर.देसाई, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, पृष्ठ 211.
6. ए.आर.देसाई, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, पृष्ठ 211.

व्यापक और आधारभूत मानवीय एवं धार्मिक सुधार आन्दोलनों का भी युगों की पुरानी इस अमानुशिक प्रथा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। परम्परासम्मत, धर्मपूत यह प्रथा अपनी सम्पूर्ण बर्बर शक्ति के साथ सदियों तक जीवित रही।[7]"

Scanned with CamScan